Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

हिंदू धर्म के पुरोधा : स्वामी विवेकानंद

मुक्ता साहू तेली*

* एम.ए. (इतिहास) यूजीसी नेट, जी- 465,66 आजाद नगर, भीलवाड़ा (राज.) भारत

प्रस्तावना – स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी, 1863 को कोलकाता में हुआ था बचपन से ही उनका झुकाव हिंदू धर्म व दर्शन के प्रति अधिक रहा। वे एक जिज्ञासु व चंचल प्रवृत्ति के बालक थे , जिन्हें तर्क करना व अपने सवालों के जवानों का संतुष्टि पूर्ण उत्तर खोजने में आनंद की अनुभूति होती थी।

ऐसे ही सवालों की खोज में वे रामकृष्ण परमहंस से मिले ,जिन्होंने उनके प्रश्न 'क्या आपने भगवान को देखा है' का उत्तर 'हाँ' में दिया। बाद में वे रामकृष्ण परमहंस के शिष्य बन गए। अपने गुरु के नाम पर ही उन्होंने रामकृष्ण मिशन की 5 मई ,1897 ई को वेल्लूर कर्नाटक में स्थापना की। रामकृष्ण मिशन के सिद्धांतों का मुख्य आधार वेदांत दर्शन है जिसके अनुसार ईश्वर निराकार, मानव बुद्धि से परे व सर्वव्यापी है। मिशन ने हिंदू धर्म के सुधार के रूप में नहीं अपितु सेवा के रूप में अधिक महत्व दिया। उन्होंने हिंदुओं को अपने गौरवशाली अतीत से परिचय करवाया।

विवेकानंद शंकराचार्य के अद्धैतवाद से अधिक प्रभावित रहे। वे वेदों व वेदांत दर्शन पर अधिक बल देते थे, लेकिन वह मूर्ति पूजा के विरोधी नहीं थे, विवेकानंद कोलकाता के दक्षिणेश्वर मंदिर में नियमित रूप से जाते थे। वहीं उनकी भेंट रामकृष्ण परमहंस से हुई उनसे दीक्षा प्राप्त करने के बाद नरेंद्र नाथ विवेकानंद के नाम से जाने गए। 1886 में श्री परमहंस का महा प्रस्थान हो गया महाप्रस्थान करने से तीन दिन पूर्व परमहंस ने नरेंद्र नाथ को अपना उत्तराधिकार देते हुए कहा था कि– 'आज अपना सब तुम्हें देकर में रंक बन गया हूं। मैंने योग द्वारा जिस शक्ति को तुम्हारे अंदर प्रविष्ट किया है, उससे तुम अपने जीवन में महान कार्य करोगे। अपने इस कार्य को पूर्ण करने के बाद ही तुम वहां जाओगे जहां से आए हो।'

स्वामी जी ने हिंदुओं से उनके भौतिक जीवन की रक्षा एवं उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति और आत्मानुभूति दोनों के लिए स्वस्थ शरीर की आवश्यकता पर बल देने के लिए कहा। भौतिक दृष्टि से इन्होंने कहा कि इस समय हमें ऐसे बलिष्ठ लोगों की आवश्यकता है जिनकी पेशियां लोहे के समान दृढ़ हो और स्नायु फौलाद की तरह कठोर। स्वामी जी ने हिंदुओं के पिछड़ेपन का कारण उनके बौद्धिकता के पिछड़ेपन को बताया है और कहा है कि यदि हम अपने बच्चों का ,परिवार का बौद्धिक विकास करना चाहते हैं तो पूरे आत्मविश्वास व दृढ़ता के साथ अपने ज्ञान को संसार के समक्ष रखना होगा।

स्वामी विवेकानंद का हिंदू धर्म में प्रमुख योगदान इसे एक उचित पहचान, एक पूर्णता प्रदान करना था। स्वामी जी से पहले केवल कुछ संप्रदाय थे, जिनमें से प्रत्येक कमोबेश स्वतंत्र थे। इन सभी संप्रदायों के साझा आधार के रूप में हिंदू धर्म की कोई स्पष्ट समझ नहीं थी।सिस्टर निवेदिता ने लिखा है 'धर्म संसद के समक्ष स्वामी के भाषण के बारे में कहा जा सकता है कि जब उन्होंने बोलना शुरू किया तो वह 'हिंदुओं के धार्मिक विचारों'के बारे में बोल रहे थे, लेकिन जब उन्होंने भाषण समाप्त किया ,तब तक हिंदू धर्म की रचना हो चुकी थी।'

स्वामी विवेकानंद ने हिंदू धर्म को न केवल उसकी पहचान दी, बल्कि एकता भी प्रदान की। पश्चिम में पहले हिंदू धर्म प्रचारक के रूप में अमेरिका जाकर ,1893 में शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन में हिंदू का प्रतिनिधित्व करके और पश्चिम में हिंदू धर्म का प्रचार करके, स्वामी जी स्वयं हिंदू धर्म की एकता के प्रतीक के रूप में उभर कर विश्व के समक्ष आए ।अपने भाषणों ,पत्रों आदि के माध्यम से उन्होंने हिंदुओं की चेतना को जागृत किया, उन्हें उनकी साझा विरासत की याद दिलाई और हिंदुओं के बीच एकता के बंधन को मजबूत किया। स्वामी जी ने हिंदुओं को 'साझा समुदाय' का बोध कराया। हिंदू जो पहले नए धर्म के प्रति आकर्षित होने लगे थे अब उन्हें अपने धर्म के मौलिक ज्ञान का आभास दृढ़ता से होने लगा। इस पर के.एम.पाणिक्कर ने लिखा है ,'इस नए शंकराचार्य को हिंदू विचारधारा का एकीकरण करता कहा जा सकता है।'

हिंदुओं के अमूल्य वेदों ,ज्ञान कांड और कर्मकांड सहित सभी ग्रंथों को स्वीकार किया, पुराणों और इतिहासों जैसे सभी अन्य शास्त्रों को शैववाद, शक्तिवाद और वैष्णववाद जैसे सभी संप्रदायों को,अद्धैतवाद ,द्धैतवाद आदि जैसे सभी दर्शनों को, सभी संतो ऋषियों को मूर्ति पूजा से लेकर मनुष्य को ईश्वर के रूप में पूजने तक, पूजा के सभी रूपों को सभी अनुभवो ,मिथकों व कहानियों को स्वीकार किया। इन सभी विविधताओं को स्वीकार करके उन्हें पुनर्जीवित करके स्वामी विवेकानंद ने संरक्षित करने में योगदान दिया।

उसे समय के कई सुधार आंदोलन ने हिंदू धर्म को अपने संकीर्ण दृष्टिकोण में ढालने का प्रयास किया। यदि इन सुधार आंदोलन में से कोई भी हिंदू धर्म पर हावी होने में सफल हो जाता, तो हिंदू धर्म अपनी अमूल्य सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संपदा का बहुत कुछ खो देता। यही कारण है कि भारत के प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल श्री राजगोपालाचारी ने एक बार कहा था,'स्वामी विवेकानंद ने हिंदू धर्म और भारत को बचाया ,उनके बिना हम अपना धर्म खो देते और अपनी स्वतंत्रता प्राप्त नहीं कर पाते।'

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. रावत नवल, विवेकानंद की क्रांतिकारी शिक्षा, 2017, विज्ञान शिक्षण केंद्र दिल्ली।
2. भडभडे शुभांगी, विवेकानंद तुम लौट आओ, 2024, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली।
3. त्रिपाठी मधुसूदन, त्रिपाठी कुमार आदर्श, स्वामी विवेकानंद का जीवन दर्शन,2014, ओमेगा पब्लिकेशन नई दिल्ली।
4. विगत राधेश्याम, भारत गौरव विवेकान्द, प्रगति प्रकाशन, 2008, मथुरा।
5. वर्मा संगीता, भारत के निर्माता-4, 2016, वर्तिका पब्लिकेशन दिल्ली।

****